डॉ0 प्रजापति सिंह

सहायक प्राध्यापक : शिक्षाशास्त्र विभाग

राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा, बिहार–852201

(C-05) विषयः अनुशासन और विषयों की समझ (Understanding Disciplines & Subjects)

पाठ्य पुस्तक का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व (Meaning, Importance & Significance of a Text Book)

इकाई की रूपरेखा

१.१ उद्देश्य

१.२ प्रस्तावना

१.३ पाठ्य पुस्तक का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व

१.४ अपनी प्रगति की जॉच करें

१.५ अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्न

१.६ प्रगति की जॉच के लिए उत्तर

१.७ सन्दर्भ/अन्य अध्ययन

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- पाठ्य पुस्तक का अर्थ एवं परिभाषा जान सकेंगे।
- पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में जान सकेंगे।

Dr. Praja Pati Singh

१.२ प्रस्तावनाः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार की सामग्री संकलित की जाए जो बच्चों के ज्ञान, समझ, दृष्टिकोण और कौशलों को बनाने–संवारने में मददगार हो सके। बच्चों के स्थानीय परिवेश व उसके अनुभवों को भी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में महत्व देते हुए आगे बढनें के अवसर पाठ्यपुस्तक में होने चाहिए। पाठ्यपुस्तकें ऐसी हों जो अपने विषय की प्रकृति से संबध रखे और बच्चे उसको पढ़ते हुए अपना सोचना विचारना जारी रख सकें न कि ज्ञान को मात्र प्रदत्त के रूप में ग्राहय करें। इस इकाई में हम उपरोक्त बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1.3 पाठ्य पुस्तक का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्वः

पाठ्य पुस्तक का अर्थः

पाठ्य पुस्तकें वे पुस्तकें हैं जो किसी स्तर के बच्चों की पाठ्यचर्यानुसार तैयार की जाती है। इनमें वे तथ्य एवं सूचानाएं संकलित होती हैं, जिनका ज्ञान उस स्तर के बच्चों को देना चाहते हैं। आज की सम्पूर्ण शिक्षा ही पाठय–पुस्तकों पर ही आधारित हैं। आज ये पाठ्यपुस्तकें शिक्षा के मुख्य साधन के रूप में प्रयोग की जाती हैं। अतः वर्तमान में पाठ्यपुस्तकों का अत्यधिक महत्व है। सभी कक्षाओं के लिए पाठयपुस्तकें का होना अनिवार्य है। पाठय–पुस्तकें शिक्षक के कार्य की परिपूरक होती हैं। पाठ्य पुस्तकें अध्यापकों के लिए पुस्तकें शिक्षित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। शैक्षिक विकास एवं पाठ्यचर्या विकास में पाठ्यपुस्तक चयन एवं लेखन शामिल रहता है। पाठ्यपुस्तक अथवा पुस्तक अनेक प्रकार के कार्य करती हैं।

पाठ्य पुस्तक की परिभाषाः

हैरोलिकर के अनुसारः पाठ्यपुस्तक ज्ञान, अनुभवों, भावनाओं, विचारों तथा प्रवृत्तियों व मूल्यों का संचय का साधन है।

हॉलक्वेस्ट के अनुसारः पाठ्य–पुस्तक शिक्षण क्रियाओं एवं अभिप्रायों के लिए सुव्यवस्थित चिन्तन एवं ज्ञान का लिखित रूप है।

हर्ल आर. डगलस के अनुसार–अध्यापकों के अनुभवों एवं विश्लेषण के अनुसार पाठ्यपुस्तक पढने का महत्वपूर्ण आधार है।

पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता एवं महत्वः

पाठ्यपुस्तकें विद्यालय या कक्षा में छात्रों तथा शिक्षकों के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती हैं जो विषय से संबंधित पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतीकरण करती है। वास्तव में पाठ्य–पुस्तक की आवश्यकता मार्गदर्शन के लिए पडती है। वर्तमान शिक्षा में बदलते शैक्षिक अंतदृष्टि, विचारों एवं शोध करने व उससे प्राप्त नतीजों के आधारों पर पाठ्यपुस्तकों को समय–समय पर बदलने की आवश्यकता है। पाठ्यपुस्तकें मात्र सूचना आधारित न होकर बच्चों को चिंतन व खुद से करके सीखने अर्थात् ज्ञान का सृजन करने के अवसर देने वाले दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए। शासकीय शालाओं में बच्चों की पहुॅच में पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र सीखने–सिखाने का प्रमुख संसाधन होती हैं इसलिए बच्चों के लिए गुणवत्ता पूर्ण पाठ्यपुस्तकों का होना आवश्यक है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने 1952 में पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में इस बात को इंगित किया था कि उस समय की पाठ्यचर्या संकीर्ण, किताबी और सैद्धांतिक थी जिसका पाठ्यक्रम बोझिल और पाठ्यपुस्तकें अनुपयुक्त थीं। इस आयोग ने यह सुझाव दिया कि प्रत्येक राज्य में एक शक्तिशाली समिति का गठन हो जो पाठ्यपुस्तकों का चयन करें एवं उपयुक्त आधार बनाए। आयोग ने बल देकर

Dr. Praja Pati Singh

कहा था कि किसी भी अध्ययनीय विषय के लिए कोई एक पाठ्यपुस्तक निर्देशित नही होनी चाहिए, बल्कि मानकों पर खरी, सोची समझी, परखी हुई पाठ्यपुस्तकों के सुझाव विद्यालयों को दिए जाएँ जिसमें से वे जो विकल्प चाहे चुन लें।

1964–66 के शिक्षा आयोग ने भी स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता की ओर ध्यान आकर्षित किया है। आयोग ने पाठ्यपुस्तकों की निम्न कोटि का कारण पाठ्यपुस्तकों की तैयारी एवं निर्माण में शोध की कमी को बताया और विषयों के एकीकरण के बिन्दुओं को चिन्हित किया। आयोग ने राष्ट्रीय मानकों को परिभाषित करने की मांग की और केन्द्रीय पाठ्यपुस्तकों का सुझाव दिया जो राष्ट्रीय मानकों के आधार पर हों। सुझाव था कि पाठ्यपुस्तक निर्माण राष्ट्रीय स्तर और राज्य स्तर पर शुरू हो और राज्य स्तर पर भी संस्थाएँ स्थापित हों। यदि हम ध्यान से देखें तो पाठ्यपुस्तकों की समस्यात्मक भूमिका अंग्रेजों के समय की शिक्षा व्यवस्था से शुरू होकर आज तक चल रही है और अब तो स्कूल और कक्षा में इसने सबसे महत्वपूर्ण स्थान पा लिया है और पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम की भूमिका को दरकिनार कर दिया है।

तो आइये पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में जानें–

- पुस्तकों की सहायता से शिक्षा की प्रक्रिया बहुत ही व्यवस्थित ढंग से चलती है और अध्यापक पूरे समय हेतु योजना बना सकते है।
- पाठ्यपुस्तकें पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण करने में सहायक हैं।
- पाठ्यक्रम के अनुसार विषय का संगठित ज्ञान एक स्थान पर मिल जाता है।
- जब कक्षा छात्र कक्षा ज्ञान में अधूरे रहते हैं। तब पुस्तकों का सहारा लेकर उस अधूरे ज्ञान को स्पष्ट एवं निश्चित करते हैं। शिक्षक केवल पथ–प्रदर्षक के रूप में कार्य करता है।
- छात्रों एवं शिक्षकों को यह जानकारी मिलती है कि किस कक्षा स्तर के लिये कितनी विषय–वस्तु का अध्ययन–अध्यापन करना है।
- छात्रों का मानसिक स्तर इतना नहीं होता कि वे विद्यालय में पढ़ायी हुई विषय–वस्तु को एक ही बार में सीख सकें। उन्हें विषय–वस्तु को कई बार दोहराना भी पड़ता है। इस कार्य में पाठ्यपुस्तकें सहायक हैं।
- पाठ्य–पुस्तकें अध्यापक की पूरक होती हैं। अध्यापक के उपस्थित न रहने पर यदि छात्र चाहे तो स्वअध्ययन से पाठ को आगे पढा सकते हैं।
- छात्रों एवं शिक्षकों के समय की बचत होती है।
- स्वाध्याय द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
- पाठ को दोहराने अथवा गृहकार्य कराना बच्चों को अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है।
- बच्चों में स्वध्याय की आदत का विकास होता है।
- कक्षा–कार्य तथा मूल्यांकन संभव होता है।
- बच्चों की स्मरण शक्ति एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।
- मंद बुद्धि तथा प्रतिभाशाली दोनों प्रकार के बच्चों के लिये उपयोगी होती हैं।
- विषय–वस्तु को तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है जिससे बच्चों के लिए विषय–वस्तु सरल एवं सुगम हो जाती है।
- पाठ्य–पुस्तकें समस्याओं को हल करने में सहायता करती है तथा कुछ पहेली टाइप समस्याओं से छात्रों का मनोरंजन भी हो सकता है।
- ज्ञान को व्यवस्थित करने में पाठ्यपुस्तकें सहायक होती हैं।
- अध्ययन में एकरूपता आ जाती है।
- शिक्षकों एवं छात्रों को विद्वानों के विचारों से परिचित कराती है।
- कक्षा शिक्षण की कमियों को दूर करती हैं।

Dr. Praja Pati Singh

- परीक्षा लेने में भी पाठ्य–पुस्तकें शिक्षकों की सहायता करती हैं क्योंकि प्रश्न पाठ्य–पुस्तकों में से रखकर प्रश्न–पत्रों को पाठयक्रम के अनुसार सीमित तैयारी के साथ परीक्षा में अथवा मूल्यांकन में सफल हो जाते हैं।

1.4 अपनी प्रगति की जॉच करें:

अपनी प्रगति की जॉच करें:

नोटः (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

1. पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता के कोई चार कारण लिखिए।

.....
.....
.....

1.5 अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्नः

1. पाठ्यपुस्तक से क्या तात्पर्य है? माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में किस बात को इंगित किया है? विवेचना कीजिए।

2. पाठ्यपुस्तक से क्या अभिप्राय है? इनकी आवश्कता एवं महत्व का वर्णन कीजिए।

1.6 प्रगति की जॉच के लिए उत्तर :

1. पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता के निम्नलिखित चार कारण हैं:
   - पुस्तकों की सहायता से शिक्षा की प्रक्रिया बहुत ही व्यवस्थित ढंग से चलती है और अध्यापक पूरे समय हेतु योजना बना सकते है।
   - पाठ्यक्रम के अनुसार विषय का संगठित ज्ञान एक स्थान पर मिल जाता है।
   - पाठ्यपुस्तकें पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण करने में सहायक हैं।
   - पाठ्य–पुस्तकें समस्याओं को हल करने में सहायता करती है।

विशेषः आपको हमारे द्वारा दी गयी जानकारी कैसी लगी और आपके कितना काम आयी हमे बताना न भूले और यदि आपके मन में कोई प्रश्न, सुझाव या शिकायत हो तो हमे बता सकते हैं हम उसे सुलझाने की कोशिश करेंगे।

1.7 सन्दर्भ/अन्य अध्ययनः

- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान परिषद्, नई दिल्ली।
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक का आधार पत्र, एन.सी.ई.आर.टी.,नई दिल्ली।
- पर्यावरण अध्ययन की पाठ्य पुस्तकों की समीक्षा, देहरादून, उत्तराखण्ड

Dr. Praja Pati Singh